आकार IAS

Shaping Your Dreams

समाजशास्त्र

मुख्य परीक्षा

प्रश्नपत्र-02 | भाग- 02 | इकाई- 04

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)

aakarias2014@gmail.com www.aakarias.com

9713300123, 6262856797, 6262856798

प्रश्न पत्र - 02

समाजशास्त्र
SOCIOLOGY

❒ भाग - 02

इकाई - 04

- सामाजिक समरसता के घटक, सभ्यता और संस्कृति की अवधारणा। भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ। संस्कार : विविध संदर्भ। वर्ण व्यवस्था। आश्रम, पुरुषार्थ, चतुष्ट्य। धर्म व मत-पंथों का समाज पर प्रभाव, विवाह की पद्धतियाँ।
- सामुदायिक विकास कार्यक्रम, प्रसार शिक्षा, पंचायतीराज सामुदायिक विकास में गैर सरकारी संगठनों (NGO) की भूमिका, स्व-सेवा के क्षेत्र में ग्रामीण विकास की नवीन प्रवृतियां, कुटुम्ब न्यायालय।

❒ Part - 02

UNIT - 04

- Elements of social harmony, concept of civilisation and culture. Features of Indian Culture. Rituals: Various references, Caste system. Ashram, Purushartha, Chatushtya, Religion and sect influences on society and methods of marriage.
- Community Development Programme, Extension Education, Panchayati Raj, Role of Non Governmental Organizations (NGO's) in Community Development. Recent trends in Voluntary sector regarding Rural Development, Family Court.

परीक्षा योजना

सामान्य अध्ययन के द्वितीय प्रश्न पत्र के भाग-II की इकाई-IV का **पूर्णांक 30** है।

इकाई	प्रश्न	संख्या	x	अंक	=	कुल अंक	आदर्श शब्द सीमा
इकाई-1	अति लघु उत्तरीय	03	x	03	=	09	10 शब्द/01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द/05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	11	=	11	200 शब्द

विषय सूची

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
01	समाजशास्त्र : एक परिचय	01 – 05
02	समाजशास्त्र की उत्पत्ति व विकास	06 – 12
03	समाजशास्त्र की प्रकृति	13 – 16
04	मौलिक अवधारणाएं : समाज	17 – 21
05	भारतीय समाज	22 – 34
06	सामाजिक समरसता	35 – 38
07	सभ्यता और संस्कृति की अवधारणा	39 – 45
08	भारतीय संस्कृति	46 – 52
09	संस्कार : विविध संदर्भ	53 – 61
10	वर्ण–व्यवस्था	62 – 67
11	आश्रम–व्यवस्था	68 – 75
12	पुरुषार्थ/चतुष्टय	76 – 82
13	विवाह	83 – 96
14	भारतीय समाज में धर्म	97 – 112
15	प्रसार शिक्षा	113 – 122
16	समुदाय एवं विकास योजना	123 – 126
17	सामुदायिक विकास कार्यक्रम	127 – 143
18	सामुदायिक विकास और गैर सरकारी संगठन	144 – 146
19	ग्रामीण विकास एवं स्वसेवा क्षेत्र	147 – 154
20	कुटुम्ब या परिवार न्यायालय	155 – 159

समाजशास्त्र : एक परिचय
Sociology : An Introduction

❒ समाजशास्त्र क्या है?

यह प्रश्न कुछ नया होने के साथ ही वर्तमान सामाजिक विचारकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण भी है। हम सदियों से समाज में और विभिन्न समूहों में रहते चले आये हैं हमारे व्यवहार का प्रत्येक पक्ष किसी-न-किसी सामाजिक नियम से प्रभावित होता रहा है तथा हजारों वर्ष पहले से लेकर आज तक धर्मशास्त्री, दार्शनिक और विचारक सामाजिक जीवन के विषय में अपने कुछ-न-कुछ विचार भी प्रस्तुत करते रहे हैं, लेकिन समाज को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास सर्वप्रथम 19वीं शताब्दी में **आगस्त कॉम्ट** (August Comete) ने किया। इस दृष्टिकोण से दूसरे सामाजिक विज्ञानों की तुलना में समाजशास्त्र एक नया विज्ञान है।

कोई भी व्यक्ति, जो सामाजिक जीवन के किसी भी पक्ष पर कुछ बातें कर लेता है, स्वयं को एक समाजशास्त्री कहने का भी दावा करने लगता है। वास्तविकता यह है कि एक विज्ञान के रूप में प्रत्येक विषय का अपना एक पृथक् दृष्टिकोण होता है तथा उसका एक पृथक् अध्ययन-क्षेत्र होता है। इस प्रकार समाज अथवा सामाजिक जीवन के किसी पहलू पर साधारण विचार-विमर्श करने वाला व्यक्ति 'सामाजिक' हो सकता है, लेकिन 'समाजशास्त्री' नहीं।

समाजशास्त्र को समाज का वैज्ञानिक अध्ययन मानने के बाद भी इसकी वैज्ञानिक प्रकृति के विषय में विद्वानों में मतभेद है। इस मतभेद का एक कारण यह भी है कि **"समाजशास्त्र एक परिवर्तनशील समाज का अध्ययन है, इसलिए समाजशास्त्र के अध्ययन की न तो कोई निश्चित सीमा निर्धारित की जा सकी है और न ही इसके अध्ययन-क्षेत्र को बिल्कुल स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जा सका है।"**

समाजशास्त्र का शाब्दिक अर्थ (Literal Meaning of Sociology)

AUGUST COMTE
(1798-1857)

आगस्त कॉम्ट (August Comete) वह पहले विद्वान थे जिन्होंने समाज का अध्ययन करने वाले विज्ञान को आरंभ में **'सोशल फिजिक्स'** के नाम से संबोधित किया। बाद में सन् 1838 में उन्होंने इस विज्ञान को 'Sociology' नाम दिया। यही कारण है कि कॉम्ट को **'समाजशास्त्र का जनक' (Father of Sociology)** कहा जाता है। शाब्दिक रूप से 'Sociology' शब्द दो विभिन्न स्थानों के शब्दों से मिलकर बना है। पहला शब्द **'Socius'** है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा से हुई है तथा दूसरा **'Logus'** है जो ग्रीक भाषा से लिया गया है। इन शब्दों का अर्थ क्रमशः 'समाज' तथा 'शास्त्र' है। इस प्रकार **'Sociology'** का अर्थ **'समाज' के 'विज्ञान' से है।**

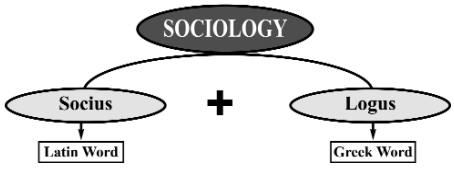

सामाजिक संबंधों का व्यवस्थित अध्ययन करने वाले विज्ञान को 'समाजशास्त्र' के नाम से ही संबोधित किया जाने लगा। **कॉम्ट** वह पहले समाजशास्त्री थे जिन्होंने समाजशास्त्र को परिभाषित करते हुए लिखा कि **"समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था और प्रगति का विज्ञान है।"** इसके बाद **हर्बर्ट स्पेन्सर** ने **'Principles of Sociology'** के नाम से समाजशास्त्र पर पहली पुस्तक लिखी।

लैपियर का कथन है, **"समाज मनुष्यों के एक समूह का नाम नहीं है, बल्कि मनुष्यों के बीच होने वाली अंतक्रियाओं और इनके प्रतिमानों को ही हम समाज कहते है।" शास्त्र अथवा विज्ञान** का अर्थ क्रमबद्ध और व्यवस्थित ज्ञान से है। 'समाज' और 'शास्त्र' शब्दों का अलग-अलग अर्थ समझने के बाद यह कह सकते हैं, कि **सामाजिक संबंधों का व्यवस्थित और क्रमबद्ध अध्ययन करने वाले विज्ञान का नाम ही समाजशास्त्र है।**

समाजशास्त्र की परिभाषाएं
Definitions of Sociology

साधारणतया सभी समाजशास्त्रों यह स्वीकार करते हैं कि समाजशास्त्र 'समाज का अध्ययन' है, लेकिन फिर भी विभिन्न समाजशास्त्रों ने समाजशास्त्र को भिन्न-भिन्न आधारों पर परिभाषित किया है। समाजशास्त्र की सभी प्रमुख परिभाषाओं को चार भागों में विभाजित करके समझा जा सकता है।

- **गिन्सबर्ग** (Ginsberg) के अनुसार, **"समाजशास्त्र मनुष्य की पारस्परिक क्रियाओं, पारस्परिक संबंधों तथा उनके कारणों और परिणामों का अध्ययन है।"**
- **दुर्खीम** के अनुसार, **"जो विशेषताएं सामूहिक जीवन का प्रतिनिधित्व करती हैं, उनमें व्यक्तियों के व्यवहारों को प्रभावित करने की भारी शक्ति होती है। यह विशेषताएं व्यक्ति की इच्छा से प्रभावित नहीं होती। इन्हीं प्रतिनिधि विशेषताओं को दुर्खीम ने सामाजिक तथ्य (Social Fact) कहा है।"**

- **"समाजशास्त्र समाज का अध्ययन करने वाला विज्ञान है, जो वैज्ञानिक पद्धति से और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से समाज और सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करता है।"**

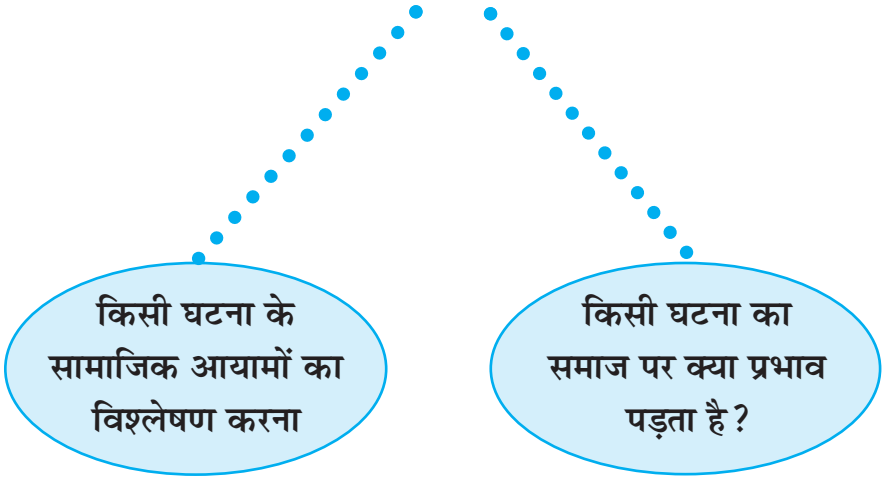

- **मैकाइवर एवं पेज** के अनुसार, **"समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों के विषयों में है और इन सामाजिक संबंधों के जाल (Network) को ही समाज कहते हैं।"**

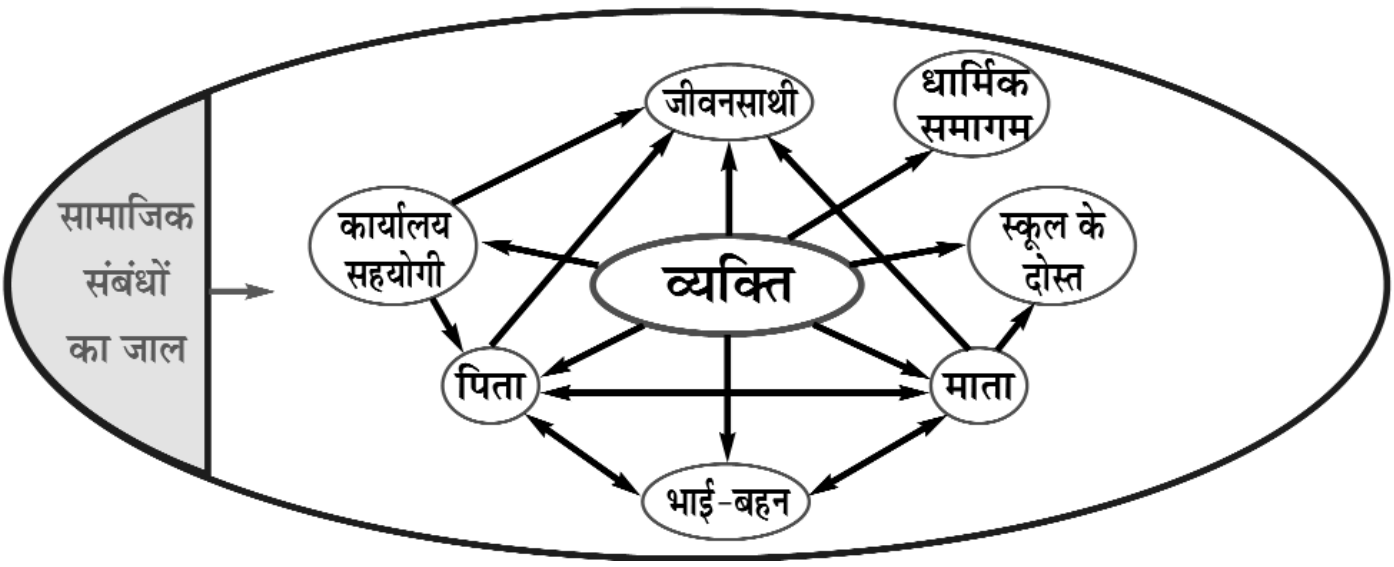

समाजशास्त्र की परिभाषाओं का वर्गीकरण
Classification of Definitions of Sociology

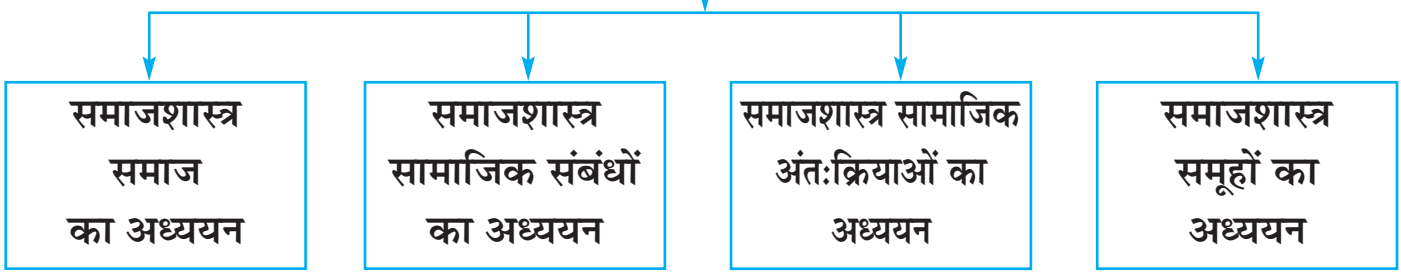

❐ समाजशास्त्र समाज का अध्ययन (Sociology: The Study of Society)

समाजशास्त्र समाज के सभी पक्षों का व्यवस्थित और क्रमबद्ध अध्ययन है। उन्होंने समाजशास्त्र को ज्ञान की एक ऐसी शाखा के रूप में स्पष्ट किया है जो संपूर्ण समाज का सामान्य दृष्टिकोण से अध्ययन करती है। **गिडिंग्स** (Giddings) ने समाजशास्त्र को परिभाषित करते हुए लिखा है, **"समाजशास्त्र समग्र रूप से समाज का क्रमबद्ध वर्णन और व्याख्या है।"** लगभग इन्हीं शब्दों में वार्ड (Ward) का कथन है, **"समाजशास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन है।"**

❐ समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों का अध्ययन (Sociology: The Study of Social Relations)

समाजशास्त्र को एक ऐसे विज्ञान के रूप में विकसित किया जाना चाहिए जिसमें सामाजिक संबंधों का व्यवस्थित रूप से अध्ययन किया जा सके। **मैकाइवर** तथा **पेज** (Maciver and Page) ने समाजशास्त्र को परिभाषित करते हुए लिखा है, **"समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों के विषय में है, (क्योंकि) सामाजिक संबंधों के जाल को ही समाज कहते हैं।"**

❐ समाजशास्त्र सामाजिक अंत:क्रियाओं का अध्ययन (Sociology: The Study of Social Interaction)

अनेक समाजशास्त्रियों का विचार है कि समाज के निर्माण में सामाजिक संबंधों की अपेक्षा सामाजिक क्रियाओं (Social Actions) का स्थान अधिक महत्वपूर्ण है। समाजशास्त्र को उन सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन मानना चाहिए जो जागरूक दशा में व्यक्तियों द्वारा सोच-समझकर की जाती है। **मैक्स वेबर** (Max Weber) ने समाजशास्त्र को परिभाषित करते हुए कहा है, **"समाजशास्त्र वह विज्ञान है, जो सामाजिक क्रियाओं का व्याख्यात्मक बोध कराने का प्रयत्न करता है।" गिलिन** और **गिलिन** (Gillin and Gillin) ने अपनी पुस्तक 'कल्चरल सोशियोलॉजी' में लिखा है, **"व्यक्तियों के एक-दूसरे के संपर्क में आने के फलस्वरूप उनके बीच जो अंतर्क्रियाएं होती हैं, उन्हीं के अध्ययन को समाजशास्त्र कहा जाता है।"**

❐ समाजशास्त्र समूहों का अध्ययन (Sociology: The Study of Groups)

इस वर्ग में 'हेनरी', 'जॉनसन', 'नोब्ज', 'हाइन', 'फ्लोमिंग' शामिल। समाज की धारणा में मतभेद हैं, इसलिए समाजशास्त्र को सामाजिक समूहों के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया है। 'समाजशास्त्र सामाजिक समूहों का विज्ञान है, सामाजिक समूह सामाजिक अंत:क्रियाओं की ही एक व्यवस्था' - **जॉनसन**। 'समाजशास्त्र सामाजिक सामूहिक समूहों का अध्ययन' - **हेनरी**।

सामाजिक संबंध का क्या अर्थ है?
What is the Meaning of Social Relation?

- समाजशास्त्रीय अर्थ में सामाजिक संबंधों का तात्पर्य उन संबंधों से होता है जो व्यक्तियों द्वारा जागरूकता की दशा में स्थापित किये जाते हैं।
- संबंध एक मेज और पुस्तक अथवा दीवार और चित्र के बीच भी होता है, लेकिन ऐसे संबंध में किसी तरह की जागरूकता अथवा चेतना न होने के कारण इसे 'सामाजिक संबंध' नहीं कहा जा सकता।
- विभिन्न समूहों में व्यक्ति जब एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं, तब वे उद्देश्य पूर्ण रूप से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के संबंध स्थापित करते हैं।
- सामाजिक संबंध भी पूरी तरह से स्वतंत्र अथवा मनमाने नहीं होते, बल्कि एक विशेष संस्कृति से संबंधित कुछ नियमों से बंधे रहते हैं।
- सामाजिक नियम अनेक रीतियों, अधिकार-व्यवस्था तथा नियंत्रण के साधनों के रूप में होते हैं। इस प्रकार **सामाजिक तथा सांस्कृतिक नियमों के प्रभाव से विभिन्न प्रकार के संबंध जब एक व्यवस्था से बंध जाते हैं तब इसी 'व्यवस्था' को हम समाज कहते है।**

सामाजिक संबंध क्यों स्थापित किए जाते हैं?
Why are Social Relations Established?

- सामाजिक संबंधों की स्थापना से ही व्यक्ति को मानसिक संतुष्टि प्राप्त होती है।
- संबंधों की सहायता से ही व्यक्ति अपने विशेष हितों को पूरा कर सकता है।
- दूसरे लोगों से संबंध स्थापित किए बिना व्यक्ति शारीरिक और मानसिक आधार पर अपनी रक्षा नहीं कर सकता है।
- प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में दूसरे लोगों से कुछ विशेष तरह के व्यवहारों की अपेक्षा रखता है जो उनके बीच संबंधों की स्थापना से ही संभव है।

अभ्यास-प्रश्न

03 अंक

1. समाजशास्त्र के शाब्दिक अर्थ को समझाइए?
2. समाजशास्त्र की किन्हीं दो परिभाषाओं का उल्लेख करें।
3. सामाजिक अंत:क्रियाएं क्या है?

05 अंक

1. समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों का वैज्ञानिक अध्ययन है। विवेचना करें।
2. समाजशास्त्र सामाजिक अंत:क्रियाओं का अध्ययन है। स्पष्ट करें।
3. समाज सामाजिक संबंधों का जाल है। टिप्पणी करें।

11 अंक

1. समाजशास्त्र को परिभाषित कीजिए तथा इसकी प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

समाजशास्त्र की उत्पत्ति व विकास
Origin & Development of Sociology

"समाजशास्त्र विषय का इतिहास तो छोटा है, किंतु इसका अतीत अत्यधिक पुराना और बड़ा है।"

विश्व के सभी देशों में आज से हजारों वर्ष पहले से विभिन्न विचारक विवाह, परिवार, विभिन्न समूहों के आपसी संबंधों, सांस्कृतिक नियमों तथा सामाजिक व्यवस्था के बारे में अपने विचारों को प्रस्तुत किया है, फिर भी **समाजशास्त्र को एक नया विज्ञान क्यों कहा जाता है?** आज से हजारों वर्ष पहले भारत में वर्ण-व्यवस्था, संयुक्त परिवार, आश्रम-व्यवस्था, व्यक्ति और समाज के संबंधों तथा विभिन्न समूहों के पारस्परिक कर्तव्यों को बहुत विस्तार से स्पष्ट करके सामाजिक जीवन को व्यवस्थित बनाने का प्रयास किया गया, लेकिन अधिकांश **विचार तर्क और वास्तविकता पर आधारित न होकर पारलौकिक जीवन और धार्मिक विश्वासों पर आधारित थे।** जैसे- राजा ईश्वर का प्रतिनिधि होता है, अपने वर्ण और जातियों से संबंधित कर्तव्यों को पूरा करने से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

यूरोप में भी **प्लेटो**, **अरस्तू** तथा **दान्ते** जैसे महान् दार्शनिकों ने स्त्रियों की स्थिति, पारिवारिक संबंधों, व्यवहार के सामाजिक नियमों तथा राज्य और व्यक्तियों के संबंधों आदि विषयों का सविस्तार उल्लेख किया है, लेकिन इनके विचारों को भी पक्षपात् रहित और वैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इनमें धर्म, कल्पना, अनुमान तथा परंपराओं का प्रभाव अधिक था।

समाजशास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन है। वैज्ञानिक अध्ययन केवल वह होता है जो कल्पना या विश्वास पर आधारित न होकर तथ्यों एवं तर्कों पर आधारित हो। अत: सामाजिक जीवन और सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न पक्षों की विवेचना यदि ईश्वरीय विश्वासों एवं पारलौकिक जगत के आधार पर की गई है तो ऐसी विवेचना को वैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता है।

समाजशास्त्र की उत्पत्ति एवं विकास हेतु आवश्यक कारक
Factors Responsible for The Origin and Development of Sociology

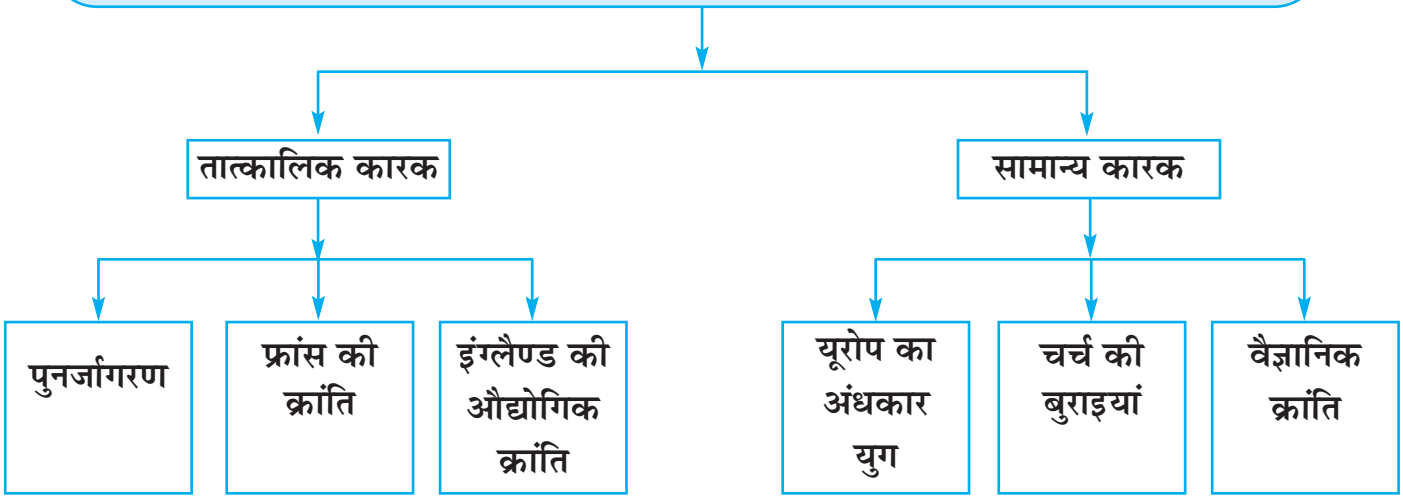

यूरोप में कुछ ऐसी घटनाएं घटित हुई जिनके फलस्वरूप वहां की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दशाओं में परिवर्तन होने लगा। पुनर्जागरण, फ्रांस की क्रांति एवं इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति मुख्य रूप से तीन ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएं थी, जिनसे अस्त-व्यस्त यूरोप का राजनीतिक और आर्थिक जीवन व्यवस्थित बनने लगा। लोगों को स्वतंत्रतापूर्वक विचार व्यक्त करने का अवसर मिला तथा ज्ञान के सभी क्षेत्रों का व्यवस्थित रूप से विकास होने लगा। समाजशास्त्र का उद्‌भव व विकास भी इन्हीं दशाओं के फलस्वरूप सर्वप्रथम यूरोप में ही हुआ।

❒ पुनर्जागरण (Renaissance)

शाब्दिक रूप से फ्रेंच भाषा के शब्द **'Renaissance'** अथवा **'पुनर्जागरण'** का अर्थ है **'फिर से जागना'**। इसे **'नया जन्म'** अथवा **'पुनर्जन्म'** भी कह सकते है। सामान्य रूप से जब कोई समाज अपने शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने लगता है अथवा लोग विभिन्न क्षेत्रों में स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचारों को स्पष्ट करने लगते है तो इसे **पुनर्जागरण का काल** कहा जाता है। यूरोप में पुनर्जागरण का काल **15वीं शताब्दी में इटली के शहर फ्लॉरेंस** से आरंभ हुआ।

मध्यकाल में विभिन्न आक्रमणों और युद्धों के कारण यूरोप में जब राजनीतिक अस्थिरता बहुत बढ़ गई। यूरोपवासियों पर चर्च तथा सामंतों का इतना अधिक प्रभाव बढ़ गया था कि लोगों की स्वतंत्र चिंतन शक्ति तथा बौद्धिक चेतना लुप्त हो गई, लैटिन तथा यूनानी भाषाओं को लगभग भुला दिया गया एवं शिक्षा का प्रसार रूक गया। परिणामस्वरूप संपूर्ण यूरोप सदियों तक गहन अंधकार में डूबा रहा। अत: यूरोप के विद्वानों ने इटली में जाकर रहना प्रारंभ कर दिया। यूनानी, लैटिन और फ्रेंच साहित्य का एक बड़ा हिस्सा इटली पहुंच गया। परिणामस्वरूप इटली में धर्म, विज्ञान, दर्शन और कला पर विद्वानों ने नए दृष्टिकोण से विचार करना आरंभ कर दिया जिसके प्रभाव से एक **मानवतावादी**, **बौद्धिक चिंतन**, **तर्कशक्ति** और **वैज्ञानिक चिंतन** को प्रोत्साहन मिला व साथ ही धार्मिक अंधविश्वासों का विरोध होने लगा।

उपरोक्त प्रभाव से जर्मनी के विद्वानों ने भी चर्च में फैली बुराइयों और पादरियों के दुर्व्यवहार के बारे में आवाज उठाना शुरू कर दी। जर्मनी में **मार्टिन लूथर** द्वारा लिखी गई पुस्तक **'न्यू टेस्टामेण्ट'** में लोगों को ईसा के वास्तविक उपदेशों को समझने का अवसर मिला तथा इटली की तरह यूरोप के अन्य क्षेत्रों में भी मानवतावादी और तार्किक विचारों को प्रोत्साहन मिलने लगा। इटली और जर्मनी के बाद फ्रांस तथा इंग्लैण्ड में भी विभिन्न राजाओं की निरंकुश अधिकारों का विरोध होने के साथ-साथ वैयक्तिक स्वतंत्रता का महत्व बढ़ने लगा।

यूरोप में जब पुनर्जागरण की प्रक्रिया आरंभ हुई तो वहां धर्मनिरपेक्षता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और तार्किक विचारों के प्रभाव से विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक खोजों को भी प्रोत्साहन मिला। **थॉमस हॉब्स**, **जॉन लॉक**, **ह्यूम**, **काण्ट** जैसे विद्वानों ने प्राकृतिक नियमों के समान ही सामाजिक नियमों की भी विवेचना करना आरंभ कर दी और इस प्रकार पुनर्जागरण यूरोप में विचारों की क्रांति का आधार बन गया।

❒ फ्रांस की क्रांति (French Revolution)

1789 में होने वाली फ्रांस की क्रांति वह दूसरी प्रमुख घटना थी जिसके फलस्वरूप फ्रांस के साथ दूसरे देशों में भी लोगों ने समाज, राजनीति, धर्म तथा विज्ञान के बारे में नए विचार करना आरंभ कर दिया। क्रांति से पहले फ्रांस का शासन अप्रत्यक्ष रूप से बड़े-बड़े सामंतों, व्यापारियों एवं जागीरदारों पर निर्भर था। फ्रांस के सम्राट द्वारा लिए जाने वाले अधिकांश निर्णय समाज के इस कुलीन वर्ग के द्वारा ही तय किए जाते थे। समाज के मध्यम और निम्न वर्ग को किसी तरह के अधिकार नहीं थे। नगरों में शारीरिक श्रम करने वाले मजदूरों की हालत सबसे अधिक दयनीय थी। उच्च वर्गों द्वारा उनसे बेगार मजदूरी कराना एक सामान्य घटना थी। एक ओर सामाजिक असमानताएं बहुत अधिक थी तो दूसरी ओर बढ़ते हुए भ्रष्टाचार के कारण पूरी सामाजिक व्यवस्था अंदर से खोखली हो चुकी थी। शासक वर्ग, पादरियों और कुलीन वर्गों की विलासता के कारण फ्रांस का आर्थिक ढांचा पूरी तरह टूट चुका था।

क्रांति से पहले देश का शासन चलाने के लिए सम्राट द्वारा प्रथम, द्वितीय और तृतीय सभाओं का गठन किया गया था। प्रथम सभा के सदस्य में पादरी वर्ग, द्वितीय सभा के सदस्य में कुलीन वर्ग, व्यवसायी, व्यापारी, अदालती कर्मचारी तथा तृतीय सभा में भूमिहीन किसान, मजदूर, नौकर आदि शामिल थे। 17 जून 1789 को तृतीय सभा में सामंतों, कुलीनों क्रांति के फलस्वरूप फ्रांस में एक ऐसी व्यवस्था विकसित हुई जो **व्यक्तिगत स्वतंत्रता**, **सामाजिक और राजनीतिक समानता**, **जनता की प्रभुता** और **राष्ट्रवादी विचारों** पर आधारित थी। शासन के महत्वपूर्ण पदों पर लोगों को नियुक्त किया जाने लगा, सभी लोगों को न्याय के क्षेत्र में समान अधिकार प्राप्त हुए, विचारों की स्वतंत्रता बढ़ने से विभिन्न विचारकों ने सभी विषयों पर स्वतंत्र रूप से अपने विचार अभिव्यक्त करना आरंभ कर दिया। इससे फ्रांस में एक नई **बौद्धिक क्रांति** आरंभ हुई।

❒ इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution of England)

क्रांति का समय 1770 से 1830 के बीच माना जाता है। औद्योगिक क्रांति का आशय ऐसी दशा है जिसमें परंपरागत अर्थव्यवस्था के स्थान पर नए प्रौद्योगिक आविष्कारों के द्वारा मशीनों की सहायता से उत्पादन और आवागमन के साधनों का तीव्र विकास हुआ। जिस समय यूरोप और दुनिया के अनेक दूसरे देश धार्मिक रूढ़ियों से बंधे हुए थे, इंग्लैण्ड में धार्मिक अंधविश्वासों की जगह वैज्ञानिक खोजों और तार्किक चिंतन को अधिक महत्व दिया जा रहा था।

औद्योगिक विकास के फलस्वरूप एक ओर इंग्लैण्ड में कुटीर उद्योगों का पतन हो जाने से बेरोजगारी में वृद्धि होने लगी तो दूसरी ओर कारखानों में श्रमिकों को समुचित सुविधाएं न मिलने के कारण असंतोष बढ़ने लगा। औद्योगिक क्रांति से जैसे-जैसे सामान्य जनता की कठिनाइयां बढ़ने लगी, एक ऐसी सामाजिक आर्थिक व्यवस्था की मांग की जाने लगी, जिसके अंतर्गत एक **'समताकारी व्यवस्था'** को प्रोत्साहन मिल सके।

इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति से पूरे यूरोप में सामाजिक-आर्थिक जीवन में परिवर्तन होने के साथ ही वहां एक वैचारिक क्रांति आरंभ हुई। इस वैचारिक क्रांति में माल्थस, डार्विन, रिकॉर्डो, जे.एस. मिल, रॉबर्ट ओवन तथा आगस्त कॉम्ट जैसे विद्वानों का प्रमुख योगदान रहा। समाजशास्त्र का उद्‌भव फ्रांस और इंग्लैण्ड में होने वाले इन परिवर्तनों से बहुत अधिक प्रभावित रहा।

औद्योगिक क्रांति से समाज में हुए परिवर्तन के कारण **आगस्त कॉम्ट** एक ऐसे विज्ञान की खोज में जुटे थे जो समाज की तथा उसमें हो रहे परिवर्तनों की बारीकियों को समझते हुए मानव के विभिन्न पहलुओं को एकीकृत कर सके तथा उसे संतुलित बना सके। उनकी इसी खोज ने समाजशास्त्र रूपी **सामाजिक विज्ञान** को जन्म दिया।

❒ चर्च की बुराइयां (Evils of The Church)

ईश्वर, चर्च और धर्म के प्रति यूरोपवासियों की आस्था चरम बिंदुओं पर पहुंच गई थी। धर्मशास्त्रों में जो कुछ भी सही-गलत लिखा हुआ था या चर्च के प्रतिनिधियों द्वारा जो भी बातें कही जाती थी, उसे पूर्णत: सत्य मानना पड़ता था। विरोध करने पर मृत्युदण्ड दिया जाता था। इस प्रकार लोगों के जीवन पर चर्च का जबरदस्त प्रभाव कायम था और मानव जीवन का मुख्य ध्येय परलोक को सुधारना था। चर्च धर्मग्रंथों के स्वतंत्र चिंतन और बौद्धिक विश्लेषण का विरोधी था। सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में भी चर्च और सामंत व्यवस्था का प्रभाव लोगों पर व्याप्त था। यूरोप में पोप और चर्च के अधिकारियों की शक्ति इतनी बढ़ गई थी कि उन्होंने स्वर्ग का लालच दिखाकर गरीब जनता का शोषण करने के साथ ही अलौकिक विश्वासों का सहारा लेकर उनमें अंधविश्वासों का व्यापक प्रसार करना आरंभ कर दिया था।

❒ वैज्ञानिक क्रांति या विज्ञान के क्षेत्र में पुनर्जागरण (Renaissance in the Field of Science)

यूरोप के जीवन पर धर्म और चर्च के जबरदस्त प्रभाव होने के कारण लोगों की संसार की खोजबीन में रूचि नहीं थी। वे लोग पीढ़ियों से चले आ रहे ज्ञान-विज्ञान को ही प्रमाणिक मानते रहे। समाज में इस प्रकार की स्थिति के लिए चर्च तथा धर्माधिकारी उत्तरदायी थे, किंतु पुनर्जागरण की भावना ने किसी भी सिद्धांत को स्वीकार करने से पहले उनके विषय में निरीक्षण, अन्वेषण, जांच और परीक्षण करने पर जोर दिया।

सूर्य, चंद्र, नक्षत्र तथा अन्य ग्रह पृथ्वी की परिक्रमा करते है, **टॉलमी** के इस सिद्धांत को चर्च ने सत्य मान लिया और हजार सालों तक यही पढ़ाया जाता रहा। परंतु जब पोलैंड के वैज्ञानिक **कोपर्निकस (1473-1543)** ने टॉलमी के सिद्धांत को असत्य सिद्ध कर दिया। कोपर्निकस ने बताया कि सूर्य हमारे इस ग्रहमंडल की नाभि है और पृथ्वी सहित अनेक बहुत से ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते है। पोप तथा चर्च ने कोपर्निकस के इस नए सिद्धांत को बाइबिल और चर्च की शिक्षा को विरूद्ध मानकर इसे अस्वीकार कर दिया।

इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक **गैलीलियो (1564-1642)** ने एक दूरदर्शी बनाया, जिसकी सहायता से 50 मील दूर के जहाजों को भी स्पष्टता से देखा जा सकता था। इस दूरदर्शी यंत्र से ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन में बहुत सहायता मिली और उसने कोपर्निकस के सिद्धांत को सही बताया।